

प्रेस विज्ञप्ति

धान की सीधी बीजाई के लिए बासमती की रोबिनोवीड किस्मों की बिक्री प्रारंभ

पूसा संस्थान में आज बासमती की रोबिनोवीड किस्मों, नामतः पूसा बासमती 1979 और पूसा बासमती 1985 की बिक्री आरंभ हो गई है। यह किस्में धान की सीधी बीजाई के लिए संस्तुत हैं और इमेजथापायर 10% एस.एल. के प्रति सहिष्णु है। इस अवसर पर डॉ अशोक कुमार सिंह, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने कहा कि उत्तर पश्चिमी भारत में धान की खेती में मुख्य समस्याएँ (अ) गिरता जलस्तर (ब) धान की रोपाई में लगने वाले श्रमिकों की कमी और (स) जलभराव के साथ रोपाई विधि के दौरान होने वाले ग्रीनहाउस गैस मीथेन का उत्सर्जन हैं। धान की सीधी बीजाई में इन सभी समस्याओं का हल निहित है। सीधी बीजाई विधि में धान की पारंपरिक जलभराव विधि की तुलना में जल उपयोग उल्लेखनीय रूप से घट जाता है, क्योंकि इसमें कोई लगातार जलभराव की आवश्यकता नहीं होती। इसमें केवल माँग आधारित जल का इस्तेमाल का अनुप्रयोग, रिसाव द्वारा होने वाली जल हानि न्यूनतम, तथा वाष्पोत्सर्जन में कमी होती है। अध्ययन बताते हैं कि सीधी बीजाई विधि से लगभग 33% जल की बचत हो सकती है। अतः यह विधि विशेषकर जल की कमी वाले क्षेत्रों के लिए स्थायी विकल्प प्रदान करती है।

तथापि, इस सीधी बीजाई विधि में मुख्य समस्या खरपतवारों की है, जिसे हल करना जरूरी हो जाती है ताकि सीधी बीजाई विधि सफल हो सके। इस दिशा में, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने गहन अनुसंधान किया और बासमती धान की दो रोबिनोवीड किस्मों – पूसा बासमती 1979 और पूसा बासमती 1985 का विकसित की। यह किस्में नॉन-जी.एम. खरपतवार सहिष्णु बासमती किस्में हैं, जो इमेजथापायर 10% एस.एल. के प्रति सहिष्णु हैं और भारत में व्यावसायिक खेती के लिए विमोचित की गई हैं।

पूसा बासमती 1979



पूसा बासमती 1979, बासमती धान किस्म पी.बी. 1121 की एक एम.ए.एस. व्युत्पन्न खरपतवारनाशी सहिष्णु आइसोजेनिक-निकट वंशक्रम है, जिसमें इमेजथापायर 10% एस.एल. के प्रति सहिष्णुता को संचालित करने वाले सभी उत्परिवर्तित ए.एच.ए.एस. एलील मौजूद होते हैं। इसकी बीज से बीज तक परिपक्वता अवधि 130-133 दिन तथा औसत उपज 45.77 किं/हे. है।

पूसा बासमती 1985



पूसा बासमती 1985, बासमती की किस्म पी.बी. 1509 की एक एम.ए.एस. व्युत्पन्न खरपतवारनाशी सहिष्णु आइसोजेनिक-निकट वंशक्रम है, जिसमें इमेजथापायर 10% एस.एल. के प्रति सहिष्णुता को संचालित करने वाले सभी उत्परिवर्तित ए.एच.ए.एस. एलील मौजूद होते हैं। इसकी बीज से बीज तक परिपक्वता अवधि 115-120 दिन तथा औसत उपज 52 कि/हे. है।

इन्होंने इन दो किस्मों को धान की सीधी बीजाई (डी.एस.आर.) विधि की पद्धति के बारे में विस्तार से बताया। इन्होंने इन फसलों के कारगर खरपतवार नियंत्रण के लिए आवश्यक सावधानियों के महत्व पर विशेष बल दिया। इमेजथापायर 10% एस.एल. एक व्यापक क्षमता वाला खरपतवारनाशी है, अतः इसके प्रति सहिष्णुता होने के कारण इन किस्मों में धान की बीजाई धान में एक क्रांति लाने की क्षमता है, परिणास्वरूप बासमती धान की खेती की लागत घटेगी। साथ ही, यह किस्में न केवल निराई गुड़ाई से जुड़ी हुई श्रमसाध्य प्रक्रियाओं को घटाती हैं, बल्कि धान खेती की पारंपरिक विधियों के पर्यावरणीय प्रभावों को भी कम करती हैं। यह सतत कृषि पद्धतियों में योगदान देने तथा कुल मिलाकर कृषि पारिस्थितिक तंत्र के लिए भलाई के लिए संभावनाओं को रेखांकित करती हैं।

डॉ पी.के. सिंह, कृषि आयुक्त, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने इन किस्मों के महत्व को रेखांकित किया और पूसा संस्थान के योगदान की सराहना की कि यह संस्थान जल बचाने, उपज बढ़ाने और बेहतर जलवायु तन्मक गुणों के लिए लक्षित किस्मों के विकास कर कहा है। डॉ डी.के. यादव, सहायक महानिदेशक (बीज), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने बताया कि बासमती धान की यह दोनों किस्में इस बासमती भौगोलिक सूचक क्षेत्र के किसानों के लिए वरदान साबित होंगी। उन्होंने बताया कि फसल उत्पादन के लिए एक प्राथमिक स्रोत के रूप में बीजों का महत्व सबसे अधिक है।

ध्यान देने वाली बात यह है कि देश के कुल बासमती धान निर्यात में पूसा संस्थान की बासमती किस्मों का हिस्सा 95 प्रतिशत है, जो 51000 करोड़ रूपए बनता है। डॉ यादव ने किसानों के आग्रह किया कि वे देश की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए इन उन्नत किस्मों का प्रचार-प्रसार करें। इस दिशा में सार्थक कदम उठाते हुए इन किस्मों के बीजों का सशुल्क वितरण मंच पर हरियाणा, पंजाब, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के चार किसानों को किया गया। अन्य इच्छुक किसानों को यह बीज संस्थान की बीज उत्पादन इकाई में दिया गया।

हरियाणा के किसान प्रीतम सिंह ने धान की सीधी बीजाई (डी.एस.आर.) विधि के साथ अपने 2009 से अबतक के अनुभव के बारे में विस्तार से बताया। वे 40-50 एकड़ में इसकी खेती करते हुए, 27 किं./एकड़ की शानदार पैदावार हासिल कर रहे हैं। इनकी सफलता की कहानी इस बात की गवाही देती है कि धान की सीधी बीजाई खेती की एक सक्षम विधि है, विशेषकर तब, जब उसे उचित प्रबंधन पद्धतियों और किस्मों के साथ अपनाया जाता है। डॉ. टी.के. दास, जो सस्य विज्ञान में विशेषज्ञ प्रधान वैज्ञानिक हैं, उन्होंने धान की सीधी बीजाई विधि में इस्तेमाल होने वाले खरपतवारनाशियों की विस्तृत श्रृंखला के बारे में चर्चा की। इनके द्वारा बताई गई जानकारीयों इस प्रकार थीं, जैसे खरपतवार नियंत्रण में विभिन्न खरपतवारनाशियों की क्षमता, उनके अनुप्रयोग की विधि, खुराक, समय, और धान की सीधी बीजाई विधि के अंतर्गत खरपतवारों के प्रभावी प्रबंधन और अधिकतम उपज प्राप्त करने के तरीके। पेंडीमेथिलीन का उद्भवनपूर्व इस्तेमाल से व्यापक स्तर पर हानिकारक खरपतवारों का प्रबंधन हो जाता है, साथ ही इनके बीजों का अंकुरण और शुरूआती अवस्थाओं में बढ़वार भी अवरुद्ध होती है। तथापि, कुछ खरपतवार ऐसे होते हैं जो पेंडीमेथिलीन के अनुप्रयोग के बाद भी उग सकते हैं। इस स्थिति में, बुआई के लगभग 20 दिन के बाद इमेजथापायर का इस्तेमाल कर बचे-खुचे खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। इमेजथापायर एक उद्भवन-पश्चात खरपतवारनाशी है जो घासयुक्त और चौड़ी पत्तियों वाले खरपतवारों को लक्षित करता है, और पेंडीमेथिलीन के उद्भवन-पूर्व कार्यों की बची-खुची कसर पूरी कर देता है। किसानों को अपनी खरपतवार नियंत्रण की रणनीति में पूरी फसल अवधि के दौरान उद्भवनपूर्व और उद्भवनपश्चात दोनों प्रकार के खरपतवारनाशियों का इस्तेमाल शामिल करना चाहिए। इससे फसल की जमवार और उपज, दोनों अधिक प्राप्त होती है।

डॉ. सी. विश्वनाथन (संयुक्त निदेशक, अनुसंधान), डॉ. आर.एन. पड़ारिया (संयुक्त निदेशक, प्रसार), डॉ. गोपाल कृष्णन (अध्यक्ष, आनुवंशिकी संभाग), डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह (प्रभारी, बीज उत्पादन इकाई), पूसा संस्थान के संभागाध्यक्ष और वैज्ञानिक, किसान, बीज कंपनियाँ और मीडिया ने भी इस अवसर पर मौजूद रहे।

डॉ. आर.एन. पड़ारिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया और डॉ. ए.के. सिंह के दूरदर्शितापूर्ण नेतृत्व तथा समर्पण की सराहना की, जिन्होंने ऐसी उन्नत किस्मों के विकास के लिए अथक प्रयास किया जिससे आगामी समय में कृषि का सातत्य और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।



